सदी की प्रथम भगवती सूत्र की हस्तलिखित पाण्डुलिपी लोकार्पित

लिपीकला से ही सुरक्षित रह सकती है साहित्य संपदा : आचार्य महाप्रज्ञ

आचार्यश्री ने दिया लिपी कौशल पाठ्यक्रम तैयार करने का निर्देश

लाडनूं 24, जुलाई।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा सुधर्मा सभा में आयोजित हस्तलिखित पाण्डुलिपी लोकार्पण समारोह में विश्वविद्यालय अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने इस सदी की प्रथम भगवती सूत्र की हस्तलिखित पाण्डुलिपी का लोकार्पण किया। 273 पन्नों में 6 लाख 18 हजार 2 सौ चौबीस अक्षरों से सुसज्जित इस पाण्डुलिपी का लेखन साध्वी कल्पलता ने किया। इस मौके पर साध्वी कल्पलता ने अपने द्वारा हस्तलिखित आचार्य तुलसी के साहित्य की पाण्डुलिपी भी आचार्य महाप्रज्ञ के चरणों में समर्पित की। इस पाण्डुलिपी के 450 पन्ने हैं।

समारोह को सम्बोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है। भाषा के कारण ही मनुष्य और पशु में अन्तर किया जाता है। स्वयं के ज्ञान को भाशा के द्वारा ही दूसरों तक पहुंचाया जा सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि कम्प्यूटर के युग में ग्रंथों का हस्त लेखन करना आश्चर्यजनक लगता है, पर लिपीकला के कारण ही साहित्य संपदा को सुरक्षित रखा जा सकता है। हस्तलिखित पाण्डुलिपी 500 वर्ष तक सुरक्षित रहती है और कम्प्यूटर में फीड प्रति वायरस के कारण कभी भी नष्ट हो सकती है।

आचाचार्य महाप्रज्ञ ने जैन लिपीकला पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय साहित्य संपदा को सुरक्षित रखने का सबसे बड़ा कार्य जैन मुनियों, साध्वियों एवं यतियों ने किया है। उन्होंने वर्तमान में पाण्डुलिपि कर्त्ता मुनि सुमेरमल सुदर्शन एवं साध्व कल्पलता की सुन्दर लिपी की सरहाना करते हुए कहा कि भगवती सूत्र लेखन के समय साध्वी ने काय् गुप्ति, वाक्गुप्ति एवं मनोगुप्ति की साधना की है। उन्होंने इस दुरूह कार्य के लिए मुनि सुमेरमल एवं साध्वी कल्पलता को 1 वर्ष पर्यन्त तक विगय एवं 101 कल्याणक की बख्शीस दी। आचार्य महाप्रज्ञ ने पाण्डुलिपी कला लुप्त न हो इस पर जोर देते हुए लिपी कौशल पाठ्यक्रम तैयार करने का निर्देश दिया।

युवाचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ में सूक्ष्मलिपी के क्षेत्र में मुनि कुन्दनमलजी के उल्लेखनीय कार्य की चर्चा करते हुए कहा कि भगवति सूत्र का लेखनकर साध्वी कल्पलता ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने मुनि सुमेरमल द्वारा लिखित पाण्डुलिपी भी प्रदर्शित की।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि पाण्डुलिपी का लेखन कर साध्वी कल्पलता ने श्रम साध्य कार्य किया है।

मुनि सुमेरमल सुदर्शन ने तेरापंथ में पाण्डुलिपी कला पर प्रकाश डालते हुए आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा स्थापित लिपियों की चर्चा की।

साध्वी कल्पलता ने अपने लेखन का ज्ञान कराने में साध्वी कमलूजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहने की चर्चा करते हुए कहा कि यह भगवती सूत्र पांच वर्षों में पूर्ण हुआ है। इसका लेखन आचार्य महाप्रज्ञ के आदेश की शक्ति के कारण संभव हुआ है।

प्रो. प्रेमसुमन जैन ने कहा कि पाण्डूलिपि लेखन का इतिहास का भी समृद्ध है। प्रारंभ में जैन ग्रंथों का लेखन करना दुरह कार्य था। उन्होंने भगवती सूत्र के लेखन कार्य की सरहाना करते हुए इसको इतिहासिक बताया।

विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा ने किसी साध्वी द्वारा लिखी गई पाण्डुलिपियों का महत्त्वपूर्ण स्थान बताया। इस मौके पर साध्वियों एवं समणियों ने गीतों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में कोलकाता से समागत प्रो. बनर्जी समेत अनेक प्राऔत के विद्वान उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जिनेन्द्र जैन ने किया।

लोकार्पित पाण्डुलिपी तुलसी कला प्रेक्षा की बढायेगी शोभा

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित समारोह में लोकार्पित साध्वी कल्पलता द्वारा भगवती सूत्र को हस्तलिखित पाण्डुलिपी अब तुलसी कला प्रेक्षा की शोभा बढायेगी। तुलसी कला प्रेक्षा में प्रदर्शित 16वीं शताब्दी की समिचित पाण्डुलिपियां 11वीं शताब्दी के ताड़पत्र, कष्टकला के अद्भुत नमूने चित्र कला, कैंची की कटिंग, पेंसिलकला की कलाऔतियां पर्यटकों के लिए आकर्शण का केन्द्र है।